B- III
L-26
MIH

भारतीयों के प्रयासों का परिणाम

- 19वीं सदी में विभिन्न कारणों से भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार प्रारम्भ हुआ. आधुनिक शिक्षा के साथ आधुनिक विचारों का भी प्रसार हुआ साथ ही शिक्षित मध्यवर्ग का उदय भी।

- शिक्षित वर्ग ने आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए एक तरफ सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के लिए सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की स्थापना की वहीं दूसरी तरफ राजनीतिक अधिकारों के लिए राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना की हालांकि इसमें क्षेत्रीयता के तत्व अधिक प्रबल थे।

- 1857 के विद्रोह के पश्चात स्थापित सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक संस्थाओं में क्षेत्रीयता की सीमाएं टूटने लगी और अखिल भारतीय दृष्टिकोण उभरने लगा।
  जैसे- ब्रह्म समाज, आर्य समाज, इण्डियन एसोसिएशन इत्यादि।

- शिक्षा के प्रसार के साथ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ी और इनके द्वारा अधिक मुखर होकर राजनीतिक अधिकारों की मांग की जाने लगी।

- अखबारों एवं भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी राष्ट्रीय चेतना का स्वर उभरने लगा।
- इसी पृष्ठभूमि में लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों एवं इल्बर्ट बिल के दौरान अंग्रेजों की एकता से शिक्षित भारतीयों में यह धारणा मजबूत हुई कि एकजुट होकर उन्हें भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा और इसी पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

गरम दल / उग्र राष्ट्रवादी - 1905 - 1919

गरम दल के उदय के कारण

*क्यों :-

• सरकार के विरूद्ध आक्रोश :-

विभिन्न कारणों से भारतीय समाज में विशेषकर शिक्षित भारतीय एवं युवा वर्ग में सरकार के विरूद्ध आक्रोश बढ़ता जा रहा था जैसे - रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं थे, अकाल और प्राकृतिक आपदा के दौरान प्राय: सरकार के द्वारा राहत कार्यों को अपेक्षित महत्व नही दिया जाता था इतना ही नही नरमदलीय नेतृत्व के द्वारा निरंतर राजनीतिक - आर्थिक सुधारों की मॉंग की जा रही थी लेकिन सरकार इन मॉंगों को महत्व नहीं दे रही थी। सरकार के द्वारा जो कुछ अधिकार दिए गए थे कर्जन के काल में उसे भी छीना गया जैसे - 1899 में कलकत्ता नगर निगम एवं 1904 में सरकारी विश्वविद्यालयों पर नियंत्रण बढ़ाया गया, 1904 में आफिसीएल सीक्रेट एक्ट के द्वारा प्रेस पर नियंत्रण स्थापित किया गया।

नरमदलीय नेतृत्व से असंतोष :

• नरमदलीय नेतृत्व के द्वारा निरंतर सरकार से राजनीतिक - आर्थिक सुधारों के लिए अपील की जा रही थी राष्ट्रवादियों में इस बात को लेकर आक्रोश बढ़ रहा था कि यदि सरकार इन मांगों को महत्व नहीं दे रही है तो कार्यशैली में बदलाव कर सरकार पर दबाव बनाया जाए हालांकि नरमदलीय नेतृत्व इससे सहमत नहीं थे।

शिक्षा का प्रसार :

२०वीं सदी के अन्तिम दशक तक शिक्षा के प्रसार के साथ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हुई और ये उग्र राष्ट्रवाद के बेहतरीन प्रचारक सिद्ध हुए।

विचारकों का प्रभाव :-

19वीं सदी के अन्तिम दशकों में दयानंद सरस्वती, विवेकानंद इत्यादि विचारकों की शिक्षा लेख इत्यादि ने लोगों में आत्म-विश्वास एवं आत्म गौरव के भाव को जागृत किया तथा आत्म निर्भरता के लिए भी लोगों को प्रेरित किया। इसका गरम दल पर विशेष प्रभाव दिखा।

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव :-

- जब भारत में सरकार एवं नरम दलीय नेतृत्व से आक्रोश बढ़ता जा रहा था तभी कुछ अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने युवाओं को प्रभावित किया और अंग्रेजों के विरूद्ध उग्र संघर्ष के लिए प्रेरित किया। जैसे- 1896 में इथोपिया के द्वारा इटली को पराजित करना, जापान का अत्यंत ही कम समय में आधुनिकीकरण, 1905 में जापान के द्वारा रूस को पराजित करना।

गरमदलीय नेताओं की उपस्थिति :

उपरोक्त पृष्ठ-भूमि में भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में कुछ ऐसे नेता सक्रिय थे, जो उग्र तरीकों को अपना रहे थे जैसे- महाराष्ट्र में तिलक, पंजाब में लाजपत राय, बंगाल में बिपिन चन्द्र पाल इत्यादि।

बंगाल विभाजन :

भारतीय सरकार ने बंगाल के राष्ट्रीय नेताओं के विरोध के बावजूद बंगाल को दो प्रांतों में विभाजित किया। इस मुद्दे को लेकर न केवल बंगाल बल्कि बंगाल से बाहर भी लोगों में आक्रोश

दिस्ता और 1905 में स्वदेशी आन्दोलन के रूप में उग्र तरीके से अखिल भारतीय स्तर पर अंग्रेजों का विरोध प्रारम्भ हुआ।

नोट-1 तिलक

- 1881 में मराठा और केसरी नामक अखबार का प्रकाशन शुरू किया। (मराठा; अंग्रेजी में तथा केसरी; मराठी में)
- 1893 में गणेश उत्सव प्रारम्भ किया
- 1895 में शिवाजी जयंती प्रारम्भ किये।
- 1896-97 में महाराष्ट्र में कर न देने का आन्दोलन चलाया। (No Tax Movement)
- 1897 में पूना में विदेशी कपड़ो को जलाया।
- 1887 में राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन
- 1891 में सम्मति आयु अधिनियम का तिलक ने विरोध किया।

दो प्रसिद्ध किताब- आर्कटिक होम इन द वेदास, गीता रहस्य।

- पूना में इंग्लिश स्कूल और फर्ग्युसन कालेज की स्थापना से संबंधित थे तिलक।

(B) लाला लाजपत राय

- लाला लाजपत राय पंजाब में सक्रिय थे। पंजाबी, वंदे मातरम, द. पीपल इत्यादि अखबार का प्रकाशन किया।
- किसानों के मुद्दे को लेकर सक्रिय थे।

(C-) बंगाल, विपिन चन्द्र पाल एवं अरविंद घोष

*अरविंद घोष -

- इन्होंने 1894 में एक लेख लिखा - 'न्यू लैम्प फार ओल्ड'।

- इस लेख में नरमदलीय राजनीति की व्यवस्थित तरीके से समीक्षा की थी।

नोट - 2

बंगाल विभाजन

- बंगाल, बिहार, ओड़िसा, असम, बांग्लादेश का क्षेत्र एक प्रांत था।
- 1903 में असम एवं बांग्लादेश को पूर्वी बंगाल नामक एक अलग प्रांत बनाने का प्रस्ताव सार्वजनिक किया गया।

- जुलाई 1905 में बंगाल विभाजन का आदेश जारी किया गया।
- अगस्त 1905 में कलकत्ता के टाउन हाल से स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया।
- अक्टूबर 1905 में विभाजन को लागू किया गया और इस घटना के विरुद्ध रवीन्द्रनाथ टैगोर ने रक्षाबंधन का आह्वान किया और लोगों से उपवास रखने को कहा।

बंगाल विभाजन के कारण

सरकारी तर्क :-

- सरकार का यह तर्क था कि अविभाजित बंगाल में प्रशासनिक दृष्टिकोण से कठिनाई होती है क्योंकि क्षेत्रीय दृष्टिकोण से यह अत्यंत ही विस्तृत था, प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए बंगाल को दो भागों में विभाजित करने का निर्णय लिया गया।
- सरकार का यह तर्क कुछ सीमा तक सही था, लेकिन वास्तव में केवल प्रशासनिक उद्देश्य

विभाजन का था तो भाषाई आधार पर इसका पुनर्गठन किया जाना चाहिए था जैसे कि आगे किया गया (बंगाल, बिहार, ओडिसा, असम)।

आगे अंग्रेज ऐसा ही करेंगे।

वास्तविक कारण :

- वास्तव में सरकार का उद्देश्य था राष्ट्रीय चेतना पर प्रहार करना या राष्ट्रवाद को कमजोर करना।
- पूर्वी बंगाल एवं असम का इस प्रकार गठन किया गया जिससे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव पैदा किया जा सके।
- इसी प्रकार बंगाल का इस प्रकार पुनर्गठन जैसे बांग्ला और गैर बांग्ला बोलने वाले के बीच विवाद उत्पन्न किया जा सके।